उपचुनावों के नतीजे और साम्प्रदायिक राजनीति का नंगा सच

मनोज कुमार झा

कई राज्यों में हुए उपचुनावों में भाजपा की शिकस्त के बाद राजनीतिक प्रक्षकों का मानना है कि मोदी लहर अब नहीं रही। पर ये गुबार इतनी जल्दी निकलेगा, शायद ही किसी ने सोचा हो।

लोकसभा चुनावों में भाजपा की अप्रत्याशित जीत के पीछे मोदी लहर का ही असर माना गया था। अब 'मार्गदर्शक मंडल' में दरकिनार कर दिए गए रामरथी लालकृष्ण आडवाणी ने भी पूर्ण बहुमत के साथ केन्द्र की सत्ता में भाजपा के आने का श्रेय खुले मंच पर नरेन्द्र मोदी को दिया था और भाव-विह्वल हो कर रो पड़े थे।

इधर, यूपी में 73 सीटें जीतकर रिकॉर्ड बनाने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमित शाह को 'मैन ऑफ द मैच' घोषित किया था। शाह ही यूपी में भाजपा विजय के प्रमुख योजनाकार थे। यूपी में मोदी की हवा बनाने में उनकी प्रमुख भूमिका थी। इसके पुरस्कार स्वरूप ही उन्हें भाजपा का अध्यक्ष बनाया गया। पहली बार इस देश में किसी राजनीतिक पार्टी का अध्यक्ष ऐसा व्यक्ति बना जिस पर दंगे की साजिश रचने, फ़र्जी मुठभेड़ में लोगों की हत्याएं कराने के आरोप हैं और जिसका व्यक्तित्व रहस्यमय है।

बावजूद, पहले जहां राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने गुजरात को हिंदुत्व की प्रयोगशाला बनाकर उसे साम्प्रदायिक दंगों और अल्पसंख्यकों के नरसंहार के लिये पूरी दुनिया में चर्चित कर दिया, वहीं मोदी की सफलता और उनके व्यक्तित्व में खास तरह की कट्टरता, साथ ही उनके प्रति देशी-विदेशी पूंजीपतियों के बढ़ते विश्वास का आकलन कर संघ ने उन्हें और उनके खसमखास अमितशाह की भाजपा की कमान सौंप दी। विकल्पहीनता की स्थिति में इन्होंने जनता को सब्ज़बाग दिखाए और अरबों रुपए चुनाव प्रचार में झोंक कर खूब हवाई किले बनाए, हवाई पुल बांधे। सुनियोजित तौर पर यूपी के मुज़फ्फरनगर एवं अन्य स्थानों पर सांप्रदायिक दंगे करा अल्पसंख्यक विरोध की राजनीति को चरम पर पहुंचाया और चुनाव जीतने के बाद यूपी को हिंदुत्व की दूसरी प्रयोगशाला बनाने के अभियान में लग गए। लोकसभा चुनावों के दौरान और सत्ता में आने के बाद भी कतिपय भाजपा नेता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत समेत संघ परिवार के तमाम बड़भैये-छुटभैये नेताओं, तोगड़िया और विश्व हिंदू परिषद् के अशोक सिंघल और बजरंगियों के विषबुझे बयान सामने आते रहे। संघ और भाजपा नेताओं ने घृणा का माहौल बनाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। यूपी में साम्प्रदायिक दंगों का एक सिलसिला शुरू हो गया। भाजपा अध्यक्ष अमितशाह ने खुलेआम कहा कि चुनाव जीतने के लिए दंगे जरूरी हैं। इधर, यूपी में और फ़िर पूरे देश में 'लव जिहाद' का नया ही शिगूफ़ा छोड़ा गया और मीडिया के माध्यम से इसे प्रचारित करा अल्पसंख्यकों में असुरक्षा बोध और आतंक पैदा करने की कोशिश की गई। उत्तर प्रदेश में उपचुनावों की कमान संभाले योगी आदित्यनाथ ने ज़हर उगलने में सबको पीछे छोड़ते हुए यहां तक कह दिया कि जहां अल्पसंख्यक ज्यादा होते हैं, वहीं सबसे ज्यादा दंगे होते हैं। योगी आदित्यनाथ ने 'लव जिहाद' को यूपी की राजनीति के केन्द्र में ला दिया और इसके माध्यम से अल्पसंख्यक समुदाय में आतंक फैलाने की कोशिश की। उसने कई अपमानजनक बातें भी कही। पर देश के 'प्रधान सेवक' मोदी जी मौन रहे। चुनाव आयोग और अदालत को योगी आदित्यनाथ की नकेल कसनी पड़ी।

दरअसल, लोकसभा चुनावों में मोदी ने जनता को खूब सपने दिखाए थे, 'अच्छे दिनों' के। कांग्रेस और अन्य क्षत्रप दलों के भ्रष्ट और अक्षम शासन से त्रस्त जनता ने कुछ राहत की उम्मीद में और मोदी एवं उनके भड़ैतों द्वारा दिखाए भव्य तमाशे से भी प्रभावित होकर उन्हें वोट दिया था। 'लव जिहाद' और 'देश में रहने वाली हिंदू हैं' उनका मुद्दा नहीं था। वह मोदी द्वारा सपने की तरह दिखाए गए 'अच्छे दिनों' की उम्मीद में थी, पर उसे नाउम्मीदी मिली। मोदी सरकार के तीन-चार महीने में ही असलियत जनता को समझ में आ गई। परिणामत: उपचुनावों में चित्त हो गई भाजपा। अब जल्दी ही कई राज्यों में चुनाव होने वाले हैं, वहां संघ और मोदी-अमितशाह साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की कैसी नीति अपनाते हैं और क्या कहकर जनता को धोखा देने की कोशिश करते हैं, यह देखने वाली बात होगी।

साफ़ है कि संघ और मोदी-अमितशाह का मानना था कि साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के आधार पर ही भाजपा को उपचुनावों में जीत हासिल होगी। चुनाव परिणाम ने साबित कर दिया कि उनका यह सोचना ग़लत है।

दरअसल, लोकसभा चुनावों में मोदी ने जनता को खूब सपने दिखाए थे, 'अच्छे दिनों' के। कांग्रेस और अन्य क्षत्रप दलों के भ्रष्ट और अक्षम शासन से त्रस्त जनता ने कुछ राहत की उम्मीद में और मोदी एवं उनके भड़ैतों द्वारा दिखाए भव्य तमाशे से भी प्रभावित होकर उन्हें वोट दिया था। 'लव जिहाद' और 'देश में रहने वाली हिंदू हैं' उनका मुद्दा नहीं था। वह मोदी द्वारा सपने की तरह दिखाए गए 'अच्छे दिनों' की उम्मीद में थी, पर उसे नाउम्मीदी मिली। मोदी सरकार के तीन-चार महीने में ही असलियत जनता को समझ में आ गई। परिणामत: उपचुनावों में चित्त हो गई भाजपा। अब जल्दी ही कई राज्यों में चुनाव होने वाले हैं, वहां संघ और मोदी-अमितशाह साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की कैसी नीति अपनाते हैं और क्या कहकर जनता को धोखा देने की कोशिश करते हैं, यह देखने वाली बात होगी।

कई चीज़ें तो साफ़ दिखाई भी पड़ रही हैं। साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति फेल हो गई है। यूपी में 11 में महज 3 सीटें भाजपा के हाथ लगी। राजस्थान में भी हार मिली। गुजरात में तीन सीटों पर कांग्रेस से शिकस्त का सामना करना पड़ा। नौ राज्यों में 32 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों में भाजपा का सिर्फ़ 12 सीटें मिली, जबकि कांग्रेस को सात और समाजवादी पार्टी को आठ सीटें मिली। इसके पहले बिहार, उत्तराखंड, कर्नाटक और मध्यप्रदेश में हुए उपचुनावों में भाजपा का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। इसके पीछे वजह यह रही कि मोदी सरकार कहीं से भी अपने वादे पर खरी नहीं उतरी और वह लगातार 'बुलेट ट्रेन' और कई तरह के हवाई किले ही बांधती रही। महंगाई बेलगाम, दंगे-बलात्कार, असुरक्षा, अराजकता का माहौल गरमाता रहा। संघ और संघ परिवार के मुस्टंडे लगातार घृणा का ज़हर उगलने में लगे रहे।

ऐसे में, जनता ने मोदी की हवा गुम कर दी। अब आगे चुनावों को देखते हुए अमितशाह की हवा गुम है।

वैसे, अमितशाह ने पहले ही कह दिया था कि मोदी लहर के भरोसे न रहें भाजपाई, संघ ने भी विराट रूप धरते मोदी को लेकर कहा था कि देश की जनता में मोदी लहर नहीं, हिदू लहर है। अब पता चल गया कि कैसी लहर है। भाजपा विजय के आर्किटेक्ट मोदी-अमितशाह के सामने समस्या ये है कि वे जनता के सामने कौन-सा ऐसा मुद्दा रखें कि उसे फिर से बरगला सकें। जाहिर है, जनता के जो बुनियादी मुद्दे हैं-रोटी, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य-इनका समाधान मोदी और उनकी भगवा टीम नहीं कर सकती। अंबानी-अडानी, अमेरिका-चीन-जापान इन्हें अरबों अरब दे सकते हैं, वोट नहहीं दिला सकते। वोंट तो जनता देगी, जिसका बहुलांश निर्धन है। उसे 'लव जिहाद' और 'हिंदूराज' से कोई लेना-देना नहीं। जनता हिंदू धर्म के नाम पर और मुसलमान विरोध के नाम पर भाजपा को वोट देने वाली नहीं, बल्कि भाजपा के चुनावी रणनीतिकारों में यह आशंका घर कर चुकी है कि कहीं साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की नीति चुनावों में भाजपा के लिये आत्मघाती न साबित हो जाए। भूलना नहीं होगा कि भारत में तेरह फ़ीसदी मुस्लिम आबादी है।

इधर आतंकी संगठन अलकायदा द्वारा भारत को दी गई धमकियों के मद्देनज़र अमेरिकी मीडिया सीएनएन को दिए एक इंटरव्यू में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारतीय मुस्लिम देश के लिए जिएंगे और देश के लिए मरेंगे और अलकायदा जैसे आतंकवादी संगठन के इशारे पर नहीं नाचेंगे। इसे इस रूप में देखा गया मानो नरेन्द्र मोदी ने मुसलमानों को देशभक्ति का सर्टिफिकेट दिया हो, जबकि संघ प्रमुख मोहन भागवत भारत में रहने वाले सभी लोगों को हिंदू मानने पर आमादा हैं। 'भारत में अगर रहना है तो वंदे मातरम् कहना होगा' संघ का पुराना नारा है। साथ ही, यह बात भी सामने आई कि संघ और भाजपा के नेताओं ने जो इतना ज़हर उगला अल्पसंख्यकों के ख़िलाफ़ तो मोदी ने मुंह क्यों नहीं खोला?

क्या भारत के मुस्लिम समुदाय के लोगों को अपनी देशभक्ति के लिए अब तक प्रधानमंत्री के सर्टिफिकेट की जरूरत पड़ती रही है? पर मोदी क्या करें! अगर स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास पता होता ग़दर से लेकर तो ऐसी छिछली बयानबाजी न करते।

बहरहाल, यह उपचुनावों का ही असर है कि लाख कोशिश के बावजूद भाजपा दिल्ली में सरकार नहीं बना पाई। तैयारी पूरी थी। 'आम आदमी पार्टी' के विधायक छ:-छ: करोड़ रुपए में खरीदे जा रहे थे। अरविंद केजरीवाल ने यह स्टिंग सामने ला दिया था। फ़िर भी, अगर उपचुनावों में भाजपा को जीत मिल जाती तो वह येन-केन-प्रकारेन दिल्ली में सरकार बनाने से बाज नहीं आती। संघ-मोदी-अमितशाह की पूर्ण स्वीकृति थी कि दिल्ली की सरकार पर कब्ज़ा हो, भले ही सारी नैतिकता तार-तार हो जाए। लेकिन उपचुनावों में मिली हार से मंसूबे धरे के धरे रह गए।

अभी भी सामने हरियाणा और महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव हैं, जहां मोदी-अमितशाह-संघ की हिंदूवादी साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की नीति दांव पर लगी हुई है। हरियाणा में भाजपा की ताकत 'आयाराम गयाराम' नेता हैं, जिनकी ज़मीनी हक़ीक़त क्या है, वहां के लोग़ों को अच्छी तरह पता है। भाजपा की तिकड़मी राजनीति किस हद तक चुनावी कामयाबी हासिल करती है, पता चल जाएगा। वैसे अभी वहां अमितशाह के पसीने छूट रहे हैं। सबसे बुरा हाल तो भाजपा का महाराष्ट्र में शिवसेना ने कर दिया है जिसके साथ उसका 25 साल पुराना गठबंधन है। सीटों को लेकर गठबंधन टूट गया है, क्योंकि भाजपा 'बिग ब्रदर' की भूमिका में आना चाहती थी जो अपने आपको उससे भी उग्र हिंदूवादी कहने वाला शिवसेना को मंजूर नहीं है। शिवसेना को लगता है कि इस बार वह महाराष्ट्र की सत्ता पर काबिज़ ही हो जाएगी। इसलिए वह ज़्यादा सीटें खुद लेने के पक्ष में है। शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने नरेन्द्र मोदी को यह याद दिलाया है कि 2002 में गुजरात दंगों के बाद भाजपा के कई नेता जब उनसे गुजरात के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफ़ा मांग रहे थे, तब उनके पिता दिवंगत शिवसेना सुप्रीमो बाल ठाकरे ने उनका समर्थन किया था। उद्धव ठाकरे ने साफ़ कहा है कि भाजपा केन्द्र में शासन करे और महाराष्ट्र उनके लिए छोडु दे। लूट के क्षेत्र की स्पष्ट विभाजन रेखा खींची है उद्धव ठाकरे ने। यही नहीं, मोदी और मुसलमानों को देश के लिए जीने-मरने वाला बताने पर शिवसेना के मुखपत्र 'सामना' में लेख लिख कर उन्होंने बताया है कि नरेन्द्र मोदी कट्टर हिंदूवाददी हैं। साथ ही, ये भी कहा कि जो मुसलमान देशभक्त नहीं हैं, उन्हें पाकिस्तान भेज दिया जाना चाहिए। इसे कहते हैं सच। यह नरेन्द्र मोदी अमितशाह-भाजपा-संघ का सच है। इस पर कोई परदा नहीं। नंगा सच है यह हिंदू संप्रदायवादी फ़ासिस्ट राजनीति का।

पूंजीपतियों का स्वर्ग है, ये सेज है

विशेष आर्थिक क्षेत्र (स्पेशल इकानॉमी जोन-सेज) के तहत मध्यप्रदेश की औद्योगिक राजधानी इंदौर से करीब 50 किलोमीटर दूर बसा एरिया पीथमपुरा, जहां स्थित है विशेष आर्थिक क्षेत्र, और उसके तहत छोटी-बड़ी सैंकड़ों कंपनियां। तो चलिए आपको ऐसी ही एक कम्पनी में ले चलते हैं। प्लेक्सिटफ इण्टरनेशनल लि. सेक्टर-3, पीथमपुर, इस कम्पनी में मुख्यत: पोलिस्टर बैग जिन्हें जम्बो बैग कहते हैं, बनाये जाते हैं जिन्हें मुख्यतया अमेरिका, रूस, यूरोप के देशों में सप्लाई किया जाता है। कम्पनी में 3 शिफ्टों में काम होता है। इसके अतिरिक्त अलग-अलग विभागों में 12-12 घंटे की शिप्ट चलती है। 12 घंटे की शिफ्टों में मुख्यतया क्वालिटी और स्टीचिंग विभाग आते हैं। 12 घंटे की शिफ्ट का समय 7 से 7 रहता है। बस का समय 6:10 से होता है। खास बात यह होता है कि स्टीचिंग विभाग में महिलाओं से भी 12 घंटे काम करवाया जाता है।

आम तौर पर मज़दूर घर से खाना लेकर आते हैं। अब यदि ऐसे में देखा जाय तो सुबह 4:30 बजे से उठकर तैयारी करनी पड़ती है। परन्तु कम्पनी द्वारा इस विषय पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। कमोबेश यहां की सभी कम्पनियों में कैण्टीन की यही दशा है। स्टीचिंग करने के लिये जो मशीनें यहां इस्तेमाल होती हैं हालांकि वह इलैक्ट्रिक मोटर से चलती है लेकिन उसे चलाने के लिए पांव पर अत्यधिक जोर पड़ता है। और स्टीचर के पांव में हमेशा दर्द की शिकायत बनी रहती है।

कम्पनी द्वारा शुरू में 8 घंटे के 3600 रुपये में भर्ती की जाती है। 250 रुपये 26 ड्यूटी पूरी करने के और 750 रुपये डीए के दिये जाते हैं। जो कुल मिलाकर 4600 रुपये 8 घंटे के होते हैं। यदि मज़दूर की इच्छा हो तो इस 4600 रुपये में से वह अपनी पी.एफ. कटवा सकता है। 4 घंटे ओवर टाइम रहता है जिसका सिर्फ सिंगल भुगतान ही किया जाता है। प्रत्येक मज़दूर से भर्ती प्रक्रिया में ही एक फ़ार्म पर हस्ताक्षर करवाये जाते हैं जिसमें साफ़-साफ़ लिखा होता है कि मज़दूर किसी भी तरह की यूनियन में हिस्सेदारी नहीं करेगा।

जहां एक तरफ़ कम्पनी 12 घंटे में इतने कम पैसों में मज़दूरों से काम करवाती है। वहीं दूसरी तरफ़ सुविधाओं के मामले नगण्य है, सिवाय बस की सुविधा को छोड़कर मज़दूरों को किसी भी तरह की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। वर्दी के नाम पर हाफ कमीज मिलती है जिसकी कीमत बाजार में 50 रुपये से ज्यादा नहीं है। परन्तु इसी कमीज का मज़दूरों से 150 रुपये लिया जाता है। सबसे बुरे हाल यहां की कैण्टीन के हैं। जहां 30 रुपये डाइट पर खाना दिया जाता है। जिसमें मरियल सी 6 रोटी, थोड़ा सा चावल, एक दाल जिसमें अरहर के दाने ढूंढने पड़ते हैं कुल मिलाकर ऐसा खाना ऐसा कि देखते ही कैण्टीन वाले के लिये गाली निकल जाये, जबकि कम्पनी में काम करने वालों की संख्या 2000 के आस-पास होगी।

आम तौर पर मज़दूर घर से खाना लेकर आते हैं। अब यदि ऐसे में देखा जाय तो सुबह 4:30 बजे से उठकर तैयारी करनी पड़ती है। परन्तु कम्पनी द्वारा इस विषय पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। कमोबेश यहां की सभी कम्पनियों में कैण्टीन की यही दशा है। स्टीचिंग करने के लिये जो मशीनें यहां इस्तेमाल होती हैं हालांकि वह इलैक्ट्रिक मोटर से चलती है लेकिन उसे चलाने के लिए पांव पर अत्यधिक जोर पड़ता है। और स्टीचर के पांव में हमेशा दर्द की शिकायत बनी रहती है।

वास्तव में विशेष आर्थिक क्षेत्र पूंजीपतियों की ऐशगाह है। इस पूरे ही क्षेत्र में कभी भी, किसी यूनियन का नामोनिशान नहीं है। भाजपा शासित इस राज्य में कभी भी भारतीय मज़दूर संघ (बीएमएस) द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जाती न ही कांग्रेस की इंटक का कोई नामोनिशान ही यहां दिखाई देता है।

आंदोलन की प्रबल संभावना के बावजूद प्रतिरोध के स्वर को गति देनेवाली कोई ताकत फिलहाल यहां मौजूद नहीं है। स्टीचर व क्वालिटी एक ही विभाग होने के बावजूद दोनों में गहरी खाई मौजूद है। क्योंकि स्टीचर को कम्पनी द्वारा 12 घंटे के 400 रुपये दिये जाते हैं और स्टीचर के जहन में क्वालिटी वालों के प्रति एक हीनता का भाव मौजूद रहता है।

मज़दूर वर्ग को क्रांतिकारी विचारधारा और संगठन की क्यों जरूरत है इसे यहां बखूबी समझा जा सकता है।

ये एक ऐसी दुनिया है जहां बिना अनुमति या मज़दूर बने मुख्य प्रवेश द्वार के भीतर नहीं जा सकते। सभा नहीं कर सकते, पर्चे नहीं बांट सकते हैं। यहां पर कोई भी सिक्युरिटी वाला आपको अपमानित कर सकता है। आए दिन मज़दूर जानवरों की तरह एक दूसरे पर टूट पड़ते हैं और प्रबंधन तमाशा देखता है।

कम्पनी से बाहर निकलकर बस एक ही चीज आमतौर पर मज़दूरों को सुकून देती है। किराये के कमरों के पास ही आपको चाट पकौड़ी या सस्ते रेस्टोरेंट मिल जायेंगे जहां पर शराब आसानी से मुहैया हैं पुलिस का हफ्ता तय है यहां पर कोई रोक टोक नहीं।

ये पूंजीपतियें का स्वर्ग है। ये सेज है।

-विमल जोशी,